GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA

Class No. 891.4316 H

Book No. V 7 14ग

N. L. 38.

MGIPC—S1—19 LNL/62—27 8 13—100,000.

GOVERNMENT OF INDIA

NATIONAL LIBRARY

CALCUTTA

This book was taken from the Library on the date last stamped. A note fee of 6 nP. will be charged for each day the book is kept beyond a month.

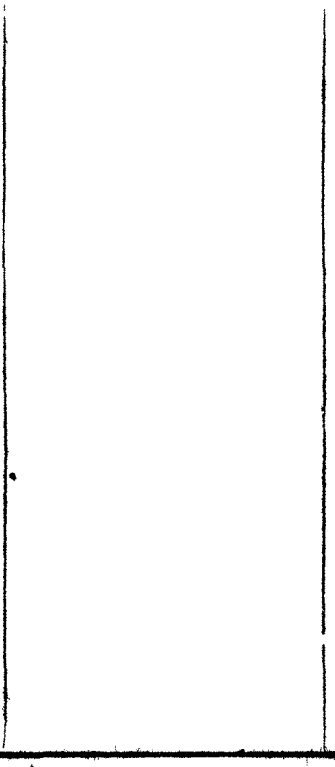

N. L. 44.

MGIPC—S1—10 LNL/62—11-12-62—50,000.

श्रीरघुनाथशतक ।

अर्थात्

श्रीआनन्दकन्द रघुनन्द श्रीरामचन्द्रजी के

पवित्र निर्मलचरित्रों का वर्णन ।

जिसे

काशीनिवासी बाबू रामकृष्णवर्म्मा

सम्पादकभारतजीवन

ने

श्रीभगवच्चरणानुरागी श्रीरामचन्द्र के

भक्तों के निमित्त संग्रह करके

प्रकाश किया ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १८९९ ई० ।

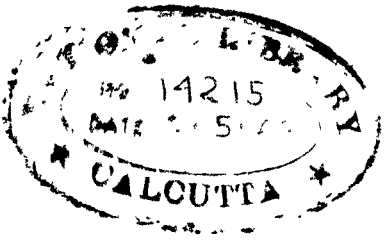
14215
CALCUTTA

रघुनाथशतक ।

कुँवर जनम जानि अवसर आनन्द को सु
माच्यौ खेर भेर राजमन्दिर में भारो है। अति
अतुराई एक सखी चलि आई जहाँ बैठे रघुबंसी
राजबंसी दरबारो है ॥ भूपमनि कान में सुधा
समान बानी कही सावन सलिल जनु सूखत
कियारी है। रघुराज मानो प्राची दिसि ते उद्दोत
भयो सोक सर्वरी को नासि आनँद तमारो है ॥

द्विजन बोलावो द्वार तोरन बँधावो इष्टदेव
सिर नावों औध आनँद ते छाइगो। तुरत
वसिष्ठजी को भवन लेवाइ ल्यावो रंगनि घो-
रावो अब सुख न समाइगो ॥ अन्नन के औनि
धर अञ्जन लगावो ल्याइ बिसद बितानन त-
नावो सोक जाइगो। रघुराज अखिल खजानन
खुलावो खूब आवो सुत जनम को सु अवसर
आइगो ॥ २ ॥

हल्ला भयो अवध महल्ला ते महल्ला मध्य गल्ला मच्यो बाहरहू जनम कुमार को । तियन को तल्ला पिय तियन पियल्ला त्यागी ढासत प्रवल्ला मल्ला धाये राजद्वार को ॥ कल्ला करें आगू जान देत लेत बल्ला केते अतिह्वै उतल्ला ना सँभार छुद्र बार को । चल्ला चल्ला छायो रव ह्वै गयो वहल्ला हमें लल्ला देत ईश आजु अवधभुवार को ॥ ३ ॥

सिद्धन की सिद्धि दिगपालन की रिद्धि वृद्धि बेधा की समृद्धि सुरसदन भुरै परी । ब्रह्मा की विभूति करतूति विस्वकरमा की साहिबी सकल पुरहूत की लुरै परी ॥ रघुराज चैत चारु नौमी सित ससिवार अवध अगार नव सिद्धिहू धुरै परी । वैभव विकुण्ठ ब्रह्मानन्द को अपार धार कौशिला के कोर यकबारहीं कुरै परी ॥ ४ ॥

औधि मांहिँ धाम धाम मोद को जनम भयो भयो बहु कोद जस जनम अछेक को । सुख को जनम भयो देवन के दल माहिँ दुख को जनम

भयो कौशप कुटेक को ॥ कहै मणिदेव महिदेव की अभय ताको जनम भयो है मख धरम विवेक को। दास हिये नेह की उमङ्ग को जनम भयो राम के जनम संग जनम अनेक को ॥५॥

राम को जनम होत आनँद उदोत भये सुमति सुपोत गावैं गुन कौं सलोक सों। अद्भुत लाभ सो अमात नहिं गात माहिं उमगी परति आभा आछी सब ओक सों ॥ मणिदेव भागवली आजु मिथिलेश भली भाँति कहैं मोदरली बानी जन झोंक सों। बचन सुधाई सों सुधन्य बसुधाई कहि धाई चली आवति बधाई सब लोक सों ॥ ५ ॥

शम्भु औ स्वयम्भु जाकी भृकुटी निहारैं नित लोकपाल जाके पदकञ्ज सिर धारे हैं। देवऋषि ब्रह्म ऋषि राजऋषि महाऋषि महिमा बिचारैं पै न पावैं नेकु पारे हैं ॥ बानी को बिलास है प्रकास चारि बेदन को विश्व सृष्टिपालन, संघार

खेलवारे हैं ॥ सोई रघुराज भूमि भारे के उतारे हेत लीन्ह्यो अवतारे अवधेस के अगारे हैं ॥७॥

मेषि को प्रदोस काल भौन महिपाल जू के चामीकर थारन में परम प्रभावली । धै धै हेम दीपक प्रदीपति सुपन्थ छाइ पहिरे सुरंग पट धारे भूषनावली ॥ मङ्गलामुखीन संग गावै मङ्गलानि गीत मङ्गलानि द्रव्य लीन्हे चारु कुसुमावली । रघुराज आई राजमन्दिर अवध नारी तारावली आगे करि मानो चपलावली ॥ ८ ॥

सात लोक ऊरध त्यों सात लोक अधहू के संजुत अखण्ड ब्रह्म अण्ड एक फन में । धारे अहिराज जौन सर्षप समान विश्व सोई तेज विश्व ते समेत छन छन में ॥ कमठावतार धारि धारै पीठि पकज सो भुवन अधार सरदार सुरगन में । ताको सूप पारि के उठाइ निज हाथन सों भूप देखरावै भानु कौसिला अँगन में ॥९॥

आये जुरि जाँचिबे को जाचक जहाँ लौं रहे एहो कवि रघुनाथ आजु तौना थर में । एते

मान दान तिन्हे भूप दसरथ दीन्हे देत न देखाई काहूँ कोऊ सोज घर में ॥ बसन के नाते बात पास कौशिला के एक भूषन के नाते नथ नाक छल्ला कर में । घोरे हाथी विचन के रहे चित्र-सारी माझ राम के जनम रह्यो दाम दफतर में॥

जोगी जाहि अचल समाधि को लगाइ ध्यावैं पावै नहिं साधक अनेकन करत हैं । सम्भु औ स्वयम्भु शक्र सकल सुरासुरादि सिद्ध मुनि जाकी बाँह छाह बिचरत हैं । वाक मन गोचर अतीत मोह माया जीत परब्रह्म पर धाम विश्व को भरत हैं । सोई रघुराज आज अवध अधीस जू के अजिर में धूरि धूसरित विहरत हैं ॥ ११ ॥

छोटे छोटे सीस तापैं टोपी लसैं छोटी छोटी छोटी सो रतनराजी छोटे लगी गोटे हैं। छोटी छोटी मोती कान छोटे कठुला त्यों कण्ठ छोटे से बिजायठ कटक दुति मोटे हैं ॥ छोटी छोटी झंगुली झलाझल झलकदार छोटी सी छरी को लिये छोटे राज ढोटे हैं । छोटे छोटे-

पायन बिहार रघुराज आज करत बिकुण्ठ सुख ओध आगे छोटे हैं ॥ १२ ॥

जागे एक द्योस राम भोरही ते रोवैं पय करत न पान राई लोन को उतारो है। बामदेव औ बसिष्ट तुरत बोलायो भौन हाथहू देवायो नारी मन्त्र पढ़ि भारी है ॥ लै लै हलरावै रगवावें त्यो देखावैं चित्र अचित्र खिलौनन खिलावैं देत तारी है । रघुराज पालने झुलावैं बजावावैं वाज जननी अनेकन जतन करि हारी है ॥ १३ ॥

ग्रास लिये हाथ में हुलासभरी ठाढ़ीं सब बालक बिसाल मणिदेव देखि भाए हैं । लाल मुख होय रह्यो होयगी खराई लाल सीतल किलाल सरजू के मँगवाये हैं ॥ खाइहै कलेऊ आसु पाइहै प्रथम सोई मायल गजाय इमि बचन सुनाये हैं । सुनिये ललौना देर करिबो भलौ ना अब लौना अति सुन्दर खिलौना आजु आये हैं ॥ १४ ॥

जननी जगावैं प्रात मज्जन करावैं बेगि मेवा के अनेकन कलेवा करवावै हैं। अति सुकुमारन कुमारन सिँगारि नीके सखन समेत पिता पास पठवावै हैं॥ रघुराज राजराज देखि रघुनन्दन को परम अनन्दन सौ अङ्क बयठावै हैं। दान को सिखावैं मान करन सिखावैं त्यों कृपान चलवावैं औ कमान चलवावै हैं॥ १५॥

एक ओर आप होत धारि अभिलाषन कौं लाषन सुभट एक ओर में अरे करैं। भाई की चलाकी अति भाई देखि रामलला मति सो लुभाई बहु बारने करे करैं॥ मणिदेव देव लखि लूटैं सुख मोटन कौं चोटन पै चोट बीर भाव सौं भरे करैं। जङ्ग बरजोरन के कठिन कठोरन के सूरसिरमौरन के पैतरे तरे करैं॥ १६॥

कलपलता के सिद्धिदायक कलपतरु कामधेनु कामना के पूरन करन हैं। तीनलोक चाहत कृपा की कोर कमला की कमला सदाही जाके सेवति चरन हैं॥ चिन्तामनि चिन्ता के

हरनहारि प्रेमसखी तीरथजनक वर बारिज बरन हैं। नख विधुपूरन समन सब दूषन ये रघुबंस भूषन के राजत चरन हैं ॥ १७ ॥

गहे हाथ बन्धुन को गौने रघुनाथ तहाँ होत भे मतङ्ग पै तुरत सवारे हैं। भाई सरदार सखा ह्वै सवार सिंधुर पै सबै प्रभु सङ्ग सङ्ग मन्द गति धारे हैं ॥ भूप चक्रवर्त्ती को निदेस बेस लीबे हेत चले पितु द्वारे देस सुखमा पसारें हैं। रघुराज धाम धाम ठाढ़े पुरबासी कोटि काम धाम वारे रामबदन निहारे हैं ॥ १८ ॥

खेलन सिकार हुए औधिराज के कुमार मोदन सों अमित अपार हुए हुज सों। सूरन के जूह हुए सुन्दर सनाहन सों तुरँग-समूह हुए पाखर की सज सों॥ मणिदेव भगत नगारन के ठोर हुए ताकि चहुँ ओर हुए कोणप ते कज सों। हौद हैं कमान हुए भाय बे प्रमान हुए मान हुए अमर बिमान हुए रज सों ॥ १९ ॥

खेलन सिकार चढ़े औधिराज के कुमार

मेलन सों सेन में सनेह निति नाधैं हैं। संगर में तिनके ते सासन में लीन होय संगर में तिन सौ हैं कौन सर साधैं हैं॥ मणिदेव तिनकी तुरङ्गन की आछी अति रंगन सों के न कविताई कवि काधैं हैं। देखैं दिवमण्डल हैं ज्यों सु महि-मण्डल में मारतण्ड-मण्डल पै मण्डल कों बाँधैं हैं॥ २०॥

खेलत सिकार अवधेस के कुमार तासों कानन सुन्यो न ऐसो कानन जगत है। लागत पहार सब हरित बनात मढ़े हार बर बरषा के रूप सो रँगत है॥ कहै मणिदेव देवदूत कह्यो देवन सों मृग मृग देव हरे रंग सों पगत है। खत ते परेवा आदि ओप सों मरेवा नीके रेवा के सुकूल ते हरेवा से लगत है॥ २१॥

आइ कै प्रतापी सखा भाष्यो नहिं मृषा भाषौं बाघ एक बैठ्यो देखि आयो यहि जाम है। सुनतहीं चारो बन्धु धाइ अति चाइ भरे दीन्ह्यो जाइ नेजा के करेजा बध काम है॥ ताहि ल-

ललकाख्यौ सोज मख्यौ करि सोर भाख्यौ मानौ
यों पुकाख्यौ रघुराजै क्रत काम है। जैसे लल-
कारि मोहि माख्यौ बरछी सो राम तैसे लल-
कारि हौं तो लेतो तुव धाम है ॥ २२ ॥

राम अवधेसनन्द खेलत सिकार बली बाँके
असिकार केर चाल परी थौंन में। कानन कों
जात बड़े ऊँचे करि कानन कों चीता सेर भीत
और भागत उड़ान में॥ कहै मणिदेव ता सवान
सों कुरङ्ग मरे तिनको बषान इमि होत है सु-
जान में। तेवर को बदलि कलेवर परत भूमि
जीव पैन्हि जेवर कों बैठत बिमान में ॥ २३ ॥

खेलत सिकार अवधेस के कुमार धीर फौज
को पसार सब गावैं जन छन छन। आछे सब
ओर ते अनाछे तिन सोहैं होत कैयो कोस पाछे
हय राजन की हन हन। कहै मणिदेव मचे
ऊँचे अति अंगन के भागत मतङ्गन के भृङ्गन
की भन भन। कानन की हदलों बखानन को.
फैली मृग प्रानन को लेनवारी बानन की सन
सन ॥ २४ ॥

खेलन सिकार चढ़ो राम अवधेसनन्द ठैलन लौं फूटि गिरि ठौर ते टरै लगे। टापन सो तरल तुरंगन की तोष भरी आपन सों भूमि सब दिग्गज डरै लगे। कहै मणिदेव देखि तेजमई सेना सबै मोद सों मजेजमई कविता करै लगे। रावन सों चण्ड गज रावन के बङ्कबली रावन के राज में परावन परै लगे ॥ २५ ॥

राघव के चाप की अखण्ड धुनि छाई तब छकै करि अदाप बाघ आदि लगे छहरन। ताड़का सो सुनि कै कराल रूप धाय महामन कै उचाट काहि कीन्हो नेकु गहरन ॥ कहै मणिदेव तहाँ कोसन लौं धाय आय भरी भूरि रोसन कियो न कहूं ठहरन। झूमि लगी कानन में लूमि लगी कुञ्ज माहिं घूमि लगी देखन सों भूमि लगी थहरन ॥ २६ ॥

भुवनाभिराम राम करिकै सलाम भूपै बैठे तेहि ठाम बन्धु सहित ललाम हैं। पूरि मनकाम पितु पूछ्यो कहो राम कहाँ कीन्हो है अराम

कैसे बीते तीनि जाम हैं ॥ रघुराज कहु सिकार को बखान आन केते मृग मारे कौन कौन तिन नाम हैं। कौन कीन्ह्यो कैसो काम कौन को दियो इनाम बदन मलान लाल लाग्यो अति घाम हैं ॥ २७ ॥

कहन सिकार-कथा लागे रघुबंसीलाल माख्यौ बिकराल ग्राह एक सत्रुसाल है। भरत सिरोमनि प्रचारि गाढ़ो गैंढ़ा हन्यो लखन महिष माथ माख्यौ करवाल है॥ कोई सखा माख्यौ मृग कोई सखा सेर माख्यो मैंहूं गजराज मृगराज माख्यौ हाल है। रघुराज बहुरि लेवाइगे महर्षि धाम कीन्ह्यो सतकार जो न पायो कीन्यो काल है ॥ २८ ॥

जाको गुन गावत न पावत हैं पार बेद जाको जस लोकन में सुखद सुढारो भो। दास प्रहलादहि बचैवे हरिनाकुस तें कठिन कराल जो नृसिंह बल भारो भो ॥ कहै हनुमान या चराचर है जाको रूप जाकी जोतिही सों सब

अग उजियारो भो। कौषप को काल,सोई दस-रथलाल ह्वैके पाय मुनि कौसिक को मख रख-वारो भो ॥ २९ ॥

नीरद बरनवारो पङ्कजनयनवारो भृकुटी-बिसालवारो लम्बभुजवारो है। पीतपट कटिवारो मन्द मुसुकानवारो सूर सरदारो रन कबहूं न हारो है ॥ रघुराज रावरे को रोज रोज प्रान प्यारो जालिम जुलफवारो कौसिला-दुलारो है। माँगनो हमारो होइ मेरो मख रखवारो राम नाम वारो जेठो तनय तिहारो है ॥ ३० ॥

भाषत परसपर ऋषिन के भीति भरे मौन मुनि कौसिक न बोले राम हेरि कै। दच्छिन दिसा ते मनो भादव निसा है घोर उठ्यो अन्ध-कार चारोओरन ते घेरि कै ॥ मूदि गयो भास-मान आसमानहीं ते तहाँ होत भै भयानक अ-वाज कान पेरि के । हल्ला मखसाला मच्यो सकल बिहाला भये रच्छौ रघुराज आज भाषैं मुनि टेरि के ॥ ३१ ॥

कोऊ भगे पाच छोड़ि कोऊ भगे होम छोड़ि कोऊ भगे सुवा छोड़ि भूसुर बिचारे हैं। कोऊ मृगचर्म त्यागे लै लै मुनि जीव भागे रहे मख-कर्म लागे भरे भीति भारे हैं॥ हाहाकार माचि रह्यौ विस्वामित्र आश्रम में हँसि रघुराज राम के तन निहारे हैं। बैठ्यो गाधिनन्दन भरोसे रघुनन्दन के जानत हमारे रघुबीर रखवारे हैं॥

काके उदै पूरुब को पुन्य परिपूरन है कौन पै बिधाता आजु दाहिनो दयाल है। काके अँगना में आजु खेलती हैं सिद्धि निधि कौन लूटि ब्रह्मानन्द ह्वै गयो निहाल है॥ आजु लौं न देखे ऐसे कुँअर कलानिधि से विरति बलित मन ह्वै गयो बिहाल है। भनै रघुराज मुनिराज क्यौं बतावो नाहि सामरो सलोनो कहौ काको यह लाल है॥ ३३॥

बिस्वबर बिदित बसुम्बरगधिराज धीर बीर-मनि अवध-अधीस नरपाल हैं। बिबुध सहाई

सक्र जाको रुख राखि चलै बन्दत चरन धराधी-
सन के माल हैं ॥ धरम धुरन्धर धरा में धाक
धावै भुव भुव सो समुद्दत प्रताप सर्वकाल हैं ।
भनै रघुराज राज-राजमनि महाराज दाहिने
दुनी के दसरत्थ जू के लाल हैं ॥ ३४ ॥

सील के समुद्र मुख-मन्दिर कृपा के पुञ्ज
सुखमा की सीम सम सरद सरोज के । कोमल
अमल चारु चातुरी चटक भरे जोहत हरत मन
मोहत मनोज के ॥ सुचिता सुगन्धता बखानै
ऐसो कौन कवि अरुन सितासित सँवारे बिधि
चोज के । बदत गुलामराम नैन अभिराम
स्याम चीकने रसीले बड़े दानी महामौज के ॥

कैधौं नील मानिक-मुकुर ओपे मैन-कर
प्रतिबिम्ब कुण्डल ललित तहाँ लोल हैं। कुंतल
कलित छिटके हैं तिन ऊपर ह्वै बिहँसत मधुर
कहत बर बोल हैं ॥ दीनन के काज श्रम सी-
करन जुत होत करन अमीकर अखिल भुव-
गोल हैं । मिथिला के टोल के लिये हैं बिन

गथ मोल. दीपति अतोल सियावर के कपोल हैं ॥ ३६ ॥

सोम सम कहौं तो कलानिधि कलङ्की सुन्यो पङ्कज से केसे कहौं पङ्क को नँदन है । काममुख सम जो बखानो राममुख आली सोऊ न बनत देहबर्जित मदन है ॥ अमल अनूप आधि व्याधि तें विहीन सदा बानी को बिलास कोटि कल्मख कदन है। बदत गुलामराम एक रस आठोजाम सोभा को सदन रामचन्द को बदन है ॥ ३७ ॥

मुमुकानि बोलनि बिलोकनि मधुर चाहि सुधा पिक झख गज मन में न आवहीं । बदन बिलोचन चरन कर बर पेखि कञ्ज इन्दु मीन मृग समता न पावहीं ॥ नासिका सु कण्ठ ओठ रदन निहारि करि कीर औ कपोत बिम्ब दाड़िम न भावहीं । बदत गुलामराम नखसिख नीके राम उपमा कहे तें कवि कुकवि कहाँ-कहीं ॥ ३८ ॥

मुकुट झलक सोहैं कुञ्चित अलक सुभ ति-लक तिलक मनि कुण्डल निहारिये । भृकुटी कुटिल नैन ऐन मैन-मदहर नासा अति ललित कपोल सुखकारिये ॥ अधर लसत मन्द हसन दसन छवि प्रेम कहै निरखें मिलत फल चारिये । राम को मुखारविन्द सुखकन्द पर वरु कोटि कोटि चन्द अरविन्द वारि डारिये ॥ ३९ ॥

प्रेमसखी रामरूप देखिबे कों दौरतौ हौ बूझो तौ बुलाय काहू सखियाँ सयानी सों । मिथिला सहर में कहर परि गयो भई घायल घनेरी कहौं झूठी न जवानी सों ॥ मेरे नैन बेधे कहूं परत न चैन ऐन तिरछी चितौनि बान भौंह धनु तानी सों । मन्द मुसकानि हाँसी फाँसी गरे डारि डारि करी कतलाम केती जुलुफ कृपानी सों ॥ ४० ॥

संगति सखान की प्रमान की सुज्ञान की उठान की उमिरि केलि कौतुक निधान की । पट्टे फहरान की दुपट्टे जाफरान की गहनि धनु

बान की बइनि बभ्रु कान की ॥ लाली मुख पान की नरेस के ललान की प्रभा मैं उपमान की अवध कुरबान की । कुंडल जो कान की कमान भौंह तान की मिठान मुसुकान की अजब एक सान की ॥ ४१ ॥

चलो री बिलोकिबे कों तिनकी बनक बीर साजि साजि भूषन बितावो री न खन कों । बोलनि अमोलनि तें हिय कों हरत सब भाँतिन तें हैं री सुखदायक चखन कों ॥ कहै हनुमान मारहू तें सुकुमार चारु कोसलकुमार लए संग में सखन कों । मोद बरसावत सनेह सरमावत री आवत हैं नगर लखावत लखन कों ॥ ४२ ॥

आवति सवारी सुनि कोसलकुमारवारी मिथिला की नारिन के वृन्द ते ठटकि रहे । धवल अगारन पै उन्नत सुढारन पै देखिबे कों तिनवारे लोचन अटकि रहे ॥ कहै मणिदेव केती बालन के बालन की अलकें मँघट ऐसी भाँति सों लटकि रहे । मेघ में सरदवारे मानों

वच्छलान पर साँवरे जलदवारे घोरवा छटकि रहै ॥ ४३ ॥

मोद तें विहीन हुते व्याकुल जे दीन लोग तिनके प्रमोद-पुंज परम जिलायें देत। साँन सों महाँन भरे अतिहीं अमान बीर बैरी बलवानन के हियन हिलायें देत ॥ कहै हनुमान काज करता कहर काल कौणप करालन के बंस कों बिलायें देत। चारु सुकुमार कोसलेस के कुमार राम मार की अपार छवि छार में मिलायें देत ॥

केते परि पावन पै चाहि रहे चाँवन सों रंग भरे दोउन के आवन अनोखे सो। सिथिला ह्वै रहे केते मिथिला के लोग सबै विथिला न होय भाव अमल झरोखे सों ॥ मणिदेव देखि के ब-जार को बिनोद राम चाहि चहुँकोद रहै मोद अति चोखे सों। निपट नवेलिन की घाकौ अलबेलिन की नांई बरबेलिन की झूमनि झ-रोखे सों ॥ ४५ ॥

सोभा सुभ ताल में सिंगार के सिवार कैधौं नागसुत ससि पै सुधा हित सुभीर के। कंज मुख पर मकरन्द हित भृङ्ग कैधौं मखतूल तन्तु स्याम मनमथ धीर के ॥ दासन के मन फाँसिवे को प्रेम-फाँस कैधौं परम हुलासकर हर भव-पीर के। चमकत कारे चटकारे लटकारे घुँघुँरारे सुकुमारे प्यारे केस रघुबीर के ॥ ४६ ॥

कंजद्युतिभंजन हैं खंजन के गंजन हैं रंजन करत जनमंजन सँवारे हैं। सोभा के सदन कोटि मोहत मदन मीन मद के कदन मृग दूरि करि डारे हैं॥ लाज गुन गेह नेह मेह बरसे अछेह देह न सम्हारे जात जब तें निहारे हैं। कारे कजरारे अनियारे झपकारे सितवारे रतनारे राम लोचन तिहारे हैं ॥ ४७ ॥

मिथिला के पन्थ मांहि बोलें सब धन्य एई जग में न अन्य इमि लेखि ल्यो री लेखि ल्यो। विविध विनोदन सों देखैं चहुंकोदन सों नीके मनमोदन सों भेखि ल्यो री भेखि ल्यो ॥ कहै

DBA000014215HIN

मणिदेव बेसमार सुखमा सों भरे औधिदेव के कुमार पेखि ल्योरी पेखि ल्यो। संग में न कोऊ अति आनँद समोऊ आज आवत हैं कौंर दोऊ देखि ल्योरी देखि ल्यो ॥ ४८ ॥

सवैया।

पुनि कोई तहाँ लखि राजकिसोरन बोलि उठी मधुरी बतियाँ। सखि येई सुबाहु मरीच हते नहिँ लागत सत्य किहूँ भतियाँ ॥ रघुराज महा सुकुमार कुमार हमार हरे हिय की गतियाँ। निसिचारिन संग लड़ावत मै कस कौसिक की न फटी छतियाँ ॥ ४९ ॥

कवित्त।

सीस सूँघि पानि पोंछि पीठहि असीस दै कै प्रकट्यो मुनि कौसिक नगर हेरि आये हाल। कहाँ कहाँ बागे कहाँ कहाँ अनुरागे अति जाग-भूमि आगे कैसी सुखमा लखौ बिसाल ॥ रघुराज मिथिलाधिराज के महल देखे लेखे कौन् लोक से सिहात जाको लोकपाल। चौथिन बजारन

अगारन हजारन में पुर नर नारिन को आये लाल के निहाल ? ॥ ५० ॥

जोरि पानि बोले रघुवीर-धीर दोऊ करत प्रवेस पुर भई अति जन भीर। देखे हैं हजारन अगारन बजारन में भूति बेसुमारन धरी हैं पन्थ तीर तीर॥ रघुराज रंगभूमि देखी है स्वयम्बर की गये नहिं राजभौंन जहाँ मिथिलेस बीर। सिष्य रावरे के अवधेस जू के डावरे बोलाये बिन बावरे से कैसे जायँ मतिधीर ? ॥ ५१ ॥

कोसल-कुमार सुकुमार हैं री मारहू तें मार्ई घेरि आई तापै सोभा त्रिभुवन की। फूल फुलवाई में चुनत दोउ भाई प्रेम-सखी लखि आई गहें लतिका द्रुमन की ॥ चरन-लुनाई दृग देखें बनिआई जिन जीतो कोमलाई औ ललाई पदुमन की। चलत सुभाय मेरो हियरा डेराय हाय गड़ि मति जाय पाय पाँखुरी सुमन की॥ ५२ ॥

पूछती कहा है उतै कौतुक महा है नहि जात सो कहा है अबै जौन लखि पाई री ।

विधि के समारे राजकुँवर पधारे प्यारे अब
मनहारे धारे विश्व सुन्दराई री॥ साँमरो सलोनो
दूजो दुति जो दिखाकवारो हग ते टरै न टारो
मति सकुचाई री। कहै ना सिराई रघुराज
देखे बनि आई आजुलौं न देखी जौन आजु
देखि आई री॥ ५३॥

नीलमनि मंजुताई नीरद की स्यामताई
अतसी कुसुम कोमलाई छटि आई री। केसर
सुगन्धताई विज्जु दीपताई सोनजुही नहि पाई
पटपीत पियराई री॥ भौंहन कमान कसि प्रीति
खरसान चोखे नैन बान मारे फूटि गासी अट-
काई री। रघुराज कैसो राजकुँवर अनोखो अरी
हौं तो हूतै घायल ह्वै घूमि घूमि आई री॥५४॥

दोहुन के बाँके नैन दोहुन को देखि थाके
दोहुन के हीन उपमा के सोभ साके हैं। कंज
मीन नाके भरे प्रेम के सुधा के मन्द कारन मृषा
के न गिरा के न उमा के हैं॥ भने रघुराज
अनुराग के मजा के मढ़े जाके सम ताके एक

एक कवि काके हैं । मेरे मनसा के गुने कहौं न मृषा के बैन सील करुना के कछु अधिक सिया के हैं ॥ ५५ ॥

बिबिध बिचित्र तातें संग ले सखी कों चारु आई गौरि पूजिबे को सोभा त्यों न आन की । तहाँ मुनिसासन तें लखन समेत राम आये फूल हेत बीर बानिक प्रमान की ॥ शङ्कर दुहूं को भयो कौतुक अनोखो चोखो कहाँ लों बखानो मति पाई नहि गान की । परम सुजान को बिलोकतही जानकी सु भूली सुधि जान की गुरू के ढिग जान की ॥ ५६ ॥

दोहा ।

गुरु समीप सुभ दोन दोउ धरिपद कियो प्रनाम ।
कौसिक कह्यो बिलम्ब करि किमि आये दूत राम॥

धरि धनु बान जोरि पानि बानि बोले राम सरल सुभाउ छल छन्द ना छुवान है । गये मिथिलेस फूलबाटिका में फूल हेत फूलन कु लेत भयो कौतुक महान है ॥ भने रघुराज आई

जनकदुलारी तहाँ पूजन के काज गौरी सहित दृसान है । सखिन-समाज देख्यौ विभव-दराज आज ऐसो ना उमा को ना रमा को सुन्यौ कान है ॥ ५७ ॥

दून सों अखण्ड बल सोऊ कवि गोऊ भयो कोऊ नहिं समता कों दोऊ बर बीर की । भञ्जिहैं पिनाक दून माहिं कछु नाहिं संक जीती दून सोभा नाकनाथ रणधीर की ॥ कहै मणि-देव बसी मेरे मन माहिं सुनो लसी अति आभा सुभ सुन्दर सरीर की । रसनि अनन्त भरी हँसनि सु मन्द महा लसनि सु चाँपवारी कसनि तुनीर की ॥ ५८ ॥

कोऊ निज बन्धु कोऊ देखे दीनबन्धु कोऊ सत्रु से निहारे कोऊ मित्र से निहारे हैं । कोऊ लखे मालक से कोऊ लखे बालक से कोऊ पेखे पालक से विस्व रखवारे हैं ॥ भने रघुराज जाको जैसो रह्यौ भाव ही में ताको तैसे जोहि परे अवध-दुलारे हैं । मरम न जान्यो कोई, कीन्ह्यो

जो चरित्र राम बरषि प्रसून देव देत भे न-
गारे हैं ॥

प्रेम-सखी जानकी को बदन-मयङ्क देखि उपमा बतावै कौन चन्द्रमा बिचारे कों। कञ्ज तें अमल मीन खञ्जन तें चञ्चल हैं मैन-सर स कुचात नैन अनियारे कों॥ नासिका सुहाई सुक-नासिका की छौनी छबि तरल तरोना दुति त-रनि उज्यारे कों। लटकन लटकि रही है अधरन पर मानहु चुनौती देति जुलफनवारे को ॥६०॥

उभै पानि अलक उठाय मिथिलेसललो हेख्यो चारि ओर कहाँ सामरो कुमार है। जहाँ जहाँ भयो दृष्टिपात मैथिली को मञ्जु तहाँ तहाँ बैठो जो जो भूमि-भरतार है ॥ सो मो सब जोहि जोहि मोहि मोहि मञ्जन पै गिरिगे न नेकु रह्यो तन को सँभार है। रघुराज रामपद-कञ्ज लागे नैन जाय कीन्हे मनो राजन-समाज खेलवार है ॥ ६१ ॥

कोई भूमिपाल रहे दन्तन से दाबि ढाल कोई करवालन को छोड़े तेहि काल हैं। कोई मोह-वारिधि में बूड़ि उतरान लागे कोई गिरे मच्छन ते बपुष बिहाल हैं॥ दुर्मद भुवालन के हाल को कहाँ लों कहौं कूटे वाल टूटी माल मन्द भये गाल हैं। मानो मोहनो को रूप धार्यो है बिदेहबाल रघुराज मन मुसक्यात रघुलाल हैं॥ ६२॥

दास देखी स्वामिनी सी दुष्ट कालजामिनी सी सखी वर भामिनी सी देव जगदम्बा सी। मातु दुहिता सी दासी कलपलता सी दैत्यभूप कालिका सी मुनि आनँदकदम्बा सी॥ सज्जन कृपा सी जोगी-जन अजपा सी सुर नारि कमला सी सठ मूरति त्यौं सम्बा सी। रहे जस आसी तिन्हे तीन बिधि भासी लखी माता सी लखन रघुराज अवलम्बा सी॥ ६३॥

विदित पुरारि को पिनाक नव खण्डन में परम प्रचण्ड त्यौं अखण्ड ओज पारावार। बड़े

बड़े वीर बृरिबगड भुजदगडन सो खगड महि-
मगड जस जान चाहै पैरि पार ॥ आजलों न
देखि तीर केते बलो बूड़े बीर गुरुता गँभीर नीर
पीर पाय माने हार । बाहुबल विरचि जहाज
रघुराज आज पावै पार मोई सिरताज भूमि-
भरतार ॥ ६४ ॥

बेदज विराट कहैं ठाट महिमा को कहैं
देवतरु बर दीन दानी बड़े गथ को । रघुकुल-
भानु कहैं परम सुजान देखि जगत को ईस बोम
बिसे पुन्य पथ को ॥ गोकुल कहत मिथिला की
पुरवासी बाम राम अभिराम रूप भावें मनमथ
को । भूप भूमगडल के कहत दिगपाल वैरीदल
कहैं काल हितू लाल दसरथ को ॥ ६५ ॥

छाय रही लहरि लुनाई की हिये में आय
कैसे कहि जाय हाय सोभा मखचन्द की । सोहैं
सिरमौर सिरमौर के जवाहिर तें सुखमा का
खौरि भाल आनँद के कन्द की ॥ भनत गनेस

काँति अतसी कुसुम भाँति हँसनि लुई री दुति दामिनी पसन्द को । कौन अबला की मति खबस करी न झाँकी प्रेम परिपाकी बाँकी झाँकी रामचन्द की ॥ ६६ ॥

भूपन को मान गयो ज्ञान गयो बीरन को बैरिन को प्रान गयो खलदल खरको । जनक को सोच गयो सङ्कट सिया को गयो पुरजन मन पुनि आनँद सुभरको ॥ गोकुल कहत साधु सुखमा सरस भई भयो है असाधुन को रूप जरो जर को । मङ्गल उदात भयो पोत पुन्य पानिप को दाय खगड होतहीं कोदण्ड महाहर को॥६७॥

फूलि उठे कमल से अमल हितू के नैन कहै रघुनाथ भरे चैन रस सियरे । दौरि आये भौंर से करत गुनी गुन गान सिद्ध से सुजान सुखसागर सों नियरे ॥ सूरभी सी खुलनि सु कवि की सुमति लागी चिरिया सी जागी चिन्ता दुष्टन के जियरे । धनुष पै ठाढ़े राम रवि से लसत आजु भोर कैसे नखत नरेन्द भये पियरे ॥६८॥

कैधौं उनचासौ पौन फोरि कै कढ़े हैं मेरु फाटिगो सुवर्न सैल ताही को तड़ाका है। बामन बहुरि कैधौं फोरयौ फेरि ब्रह्म अण्ड मारि पग दण्ड सोई रव को भड़ाका है॥ ग्रहन को सूर ससि तारागन भारा पाय टूट्यौ सुर-भानु कैधौं गगन पड़ाका है। कैधौं रघुराज रनधीर अवधेस ढोटो भञ्जो धूरजटि धनु धुनि को ध-ड़ाका है॥ ६६॥

सर पर होतो तौ सुमार हुतो तानिबे को बिना सर गहे राम कापैं जाति बरनी। चक्रित नरेस देस देस दसौ दिगपाल सुकृत समानो सेस भार क्लेस हरनी॥ धन्य अवतार दसरथ के कुमार वेद पावत न पार भुजबलन की करनी। चरचर होत चाप कर पर अन्तरिक्ष धर धर होत नीचे धक धक धरनी॥ ७०॥

कोल कच्छ दबे फन फैलत फनी के मुख धसि गई धरनी धराधर उदर के। हरके न रहैं भानु भरके तुरंग बेनी चौंकि चले वाहन बि-

रखिं हरिहर के । झम्पित गगन भुकि दम्पित दुवनदल कम्पित भुवन गुन खैचे रघुवर के ॥ दन्ती दबे आसन सकाने पाक-सासन न कोऊ थिर आसन सरासन के करके ॥ ७१ ॥

हारो दसकन्ध ते न टारो टरो ठङ्क भरि अङ्क भो न सीतल गुमान गारनीता पै । नृपन विचारो बानासुर उपचारो गयो सदन पधारो यों प्रनाम राखि रीता पै । जनकपुरी में औरै बानक बनन लागे होन लागे विविध विधान ज्ञान गीता पै । रामचन्द्र जोधा धनु ऐसे तोरि डार्‌यो मानो त्रिन तोरि डार्‌यो है निहारि बारि सीता पै ॥ ७२ ॥

तामस तें भरे नैन सुनतें जनक बैन कोप्यो मृगराज यों पिनाक सो उभरि गो । राम गहि बाम कर क्रोध करि तोर डार्‌यो चटक चटाक चिला टूटि के उतरि गो ॥ तनक भनक जब जानकी के कान परी झाँके लगी उभी पट नील तौ उघरि गो । फैल गई चाँदनी ममारख जू चहूँओर मानो राहुमुख तें क्षपाकर उछरिगो ॥

काहू ना कही है ना सुनी है तुम काहुन की मोसों सब नृपति बचे हैं कर जोरि कै । एकबार को कहा इकीस बार भारे मद सोई ज्वाल मेरे उर प्रगटी बहोरि कै ॥ छौनन समेत छत्री छिति पै न छाड़ों अब कठिन कुठारन सों काटिहौं सकोरि कै । हूजै बीर आसन प्रकासन बताबों नेकु मानत हौ त्रास न सरासन को तोरि कै ॥ ७४ ॥

जोई करो चाहत हौ सोई करो दूत आय बोले रघुराय चलवैया नीति पथ को । तोरि मैहीं धनुष जनकजा कों बरी ऐसे बोल्यो सुत भूप रूप धारें मनमथ को ॥ कहै कवि काशी-राम राम अभिराम प्रभु करुना को धाम देनहार मोख गथ को । जगत उज्यारो भुजभारो सुनि बैन ऐसे निकसि कै न्यारो भो दुलारो दसरथ को ॥ ७५ ॥

पायो तो पवन चौ सतायो तो सलिल तापै रविहू तचायो कैया जुग को डरो हुतो । बिना

रङ्ग रोगन की सकुचत हाथ लियो कान लों न तानो कछू जोर ना करो हुतो ॥ क्षमावन्त हूजै मो पै नयो बनवाय लीजै जीरन पुरानो जानि तुमहूँ धरो हुतो । राखो कौन सासन प्रकास न बतावो मुनि चाहो सो कहो पै वा सरासन सरो हुतो ॥ ७६ ॥

जानि कै पिनाक टूट्यो कीन्हो न मनाक देर आए तहाँ ताकतही क्रोध बिसतरिगे । तोखो याहि कौन कहा बलो छिनिरौन कहो मोसों तुम तौ न ऐसी बातन में अरिगे ॥ एते मांहिँ पूरन कला को अवतार गुनि कहै हनुमान हिये मोद मंजु भरिगे । साम भरे दासरथी राम को निहारि फेरि ज्ञान के कपाट भृगुराम के उघरिगे ॥ ७७ ॥

ताड़का को बध विस्वामित्र जू को जज्ञ तारो गौतम की नारी जो मढ़ीही श्राप मढ़ते । करिबो पिनाक भङ्ग बरिबो जनकसुता कौसिक जनक सब लिखो प्रेम बढ़ते ॥ एहो रघुनाथ

कवि कहिये कहाँलों सुख धावन लै आयो घरी चारि दिन चढ़ते । टूटे बन्द जामा के पुलक भरी छाती भये बिह्वल भूप दसरथ्थ पाती पढ़ते ॥ ७८ ॥

राजैं मेघ डम्बर सुअम्बर परम करि तेज चख चौंधे होत बाहन दिनेस के । सुण्डन के सीकर छुटत जब जरध कौं बसन दरीचिन के भीजत सुरेस के ॥ लङ्का होति सङ्का सुनि घननात घण्टा घोष चलत हलत फनगन भुजगेस के । उड़त मिलिन्द गण्डमण्डल ते रामकृष्ण झूमत मतङ्ग आवैं कोसलनरेस के ॥ ७९ ॥

नर ते अधिक दौरैं पक्षी अन्तरिक्षही के पक्षी ते अधिक दौरै बेगि नदी नीर के । नीर ते अधिक दौरैं बंसी कहै सिंहबली सिंह ते अधिक दौरैं तीर महाधीर के ॥ तीर ते अधिक दौरैं पवन झकोरैं जोर पौन ते अधिक दौरैं नैन-नहिँ सरीर के । नैन ते अधिक दौरैं मन तिहूं लोकन में मन ते अधिक दौरैं बाजी रघुबीर के ॥

आवत जनकजा कों व्याहन समोद सुनि दीबे कों प्रमोद-पुञ्ज परम विदेह कों । हीरन के भूषन अदूषन सों आछी भाँति कहै हनुमान साजि साजि सब देह कों ॥ देखिबे बरात में ललाम राम जू की छवि मिथिला की बाम सरसाय बर नेह कों । भूलि रहीं सौधन पै झूलि रहीं मैन हियें फूलि रहीं आनँद सों भूलि रहीं गेह कों ॥ ८१ ॥

कैधों विश्व सोभाहो की सुन्दर सुधारी पाँति कैधों रघुवंसिन की कीरति रसाल है । कैधों पुरवासिन को विमल मनोरथ है कैधों या विदेह प्रन पूरो प्रतिपाल है ॥ कैधों यह कामद कुलँग फँदिबे को फन्द कैधों मुनि मानस को मञ्जुल मराल है । कैधों सिरी रामचन्द जू के पहिराइबे कों भनत प्रसन्न सिय लीन्हीं जयमाल हैं ॥ ८२ ॥

हंस कैसे छौना स्वच्छ सोहत बिछौना बीच होति गति मोतिन की जोति जोन्ह जामिनी ।

सत्य कैसो जाग सीता पूरन सोहाग भरी चली जयमाल लै मरालमन्दगामिनी ॥ जोई उरबसी सोई मूरत प्रतच्छ लसी चिन्तामनि हँसी देखि सङ्कर की स्वामिनी। मानो सर्द चन्द चन्द मध्य अरबिन्द अरबिन्द मध्य विद्रुम बिदारि काढ़ी दामिनी ॥ ८३ ॥

गोरे स्याम रंग रति कोटिन अनङ्ग सङ्ग जाकी छबि देखि होत लज्जित बिचारे हैं। चन्द कैसो भाग भाल भृकुटी कमान ऐसी नासिका सुहाई नैन जोर छोरवारे हैं ॥ ओठ अरुनारे तैसे कुन्द से दसन प्यारे लज्जित कपोलन पै कच घुँघुँरारे हैं। अंस भुज धारे दोऊ नीलपीतपट-वारे प्रेम-सखी रामसिया जीवन हमारे हैं॥८४॥

जगमगे जोरे औ जराऊ जीन घोरे करी करिके निहोरे दीन्हे रतन अरथ के। सिविका-समूह सुवरन रूप रासि बेनी दीन्हे हथियार मन भायक भरथ के ॥ सोभित सिँगार बसुधा को सुभ सीता सार राम जू को दीन्हें जे देवैया

मनोरथ के। जोरे हग जनक न दीन्हे हग ओरे
जात कारत निहोवे विदा होत दसरथ के ॥८५॥
हरष हेराये अनि निकट बसाये दुख कौने
धों सिखाये ऐसे मन्त्र अनरथ के। कहै रघुनाथ
राजपद्दवी के समे कैसो हितू है अकाज कीन्हो
बैरी लों अकथ के ॥ केतो पाप पापिनि कमायो
देखो हाय हाय काढ़ि जैहैं प्रान ए कढ़त बोल
पथ के। राम को बिपिनबास कैकई के कहैं
देखो पीरे भए सूखि गए गात दसरथ के ॥८६॥
कोस भट बङ्क हाय लङ्क की सुपौरि तक
दौरत अतङ्क परें पौरख हरे लगे। भालुन के
भालन पै और ओप छाय रही काल के समान
ते चहूँघा डहरे लगे। कहै मणिदेव रघुराज
रणधीर जू के छै कारि प्रताप सों सदापथ हरे
लगे। बेल से गिरैंगे अब सीस दससीस तेरे
सानु पै सुबेल के निसान फहरे लगे ॥ ८७ ॥
राम रण रोखि कर गहि कै चढ़त चोखि म्यान
ते कढ़ति ज्योतिवारी करवाल है, । सहसि सु-

खात गाल सामुहें भयो न जात बैरिन के हिये सङ्क बाढ़ति बिसाल है ॥ तेजभरी तड़िता कहत एकै रसरूप कहै एक उठी प्रलयानल की ज्वाल है। एक यों कहत बीररस की प्रभा है पुञ्ज एकै कहै कालवारी रसना कराल है॥८८॥

उज्जल अमल आभा अधिक बिराजमान गङ्गा की तरङ्ग सुरलोक की निसेनी है । रस रौद्र पूरन सरस्वती सहित जहाँ स्यामता सहज रविसुता छबिदेनी है ॥ भट-अवतंस महाराज रघुबंसमणि कहै रसरूप जाकी धारा अति पैनी है। महा मदवन्त बलवन्त बड़े बैरिन के तारिबे को थारी तरवारि ज्यों त्रिबेनी है ॥ ८९ ॥

राय दसरत्थ के सपत्थ रघुबीर बीर बीरता विदित तेरी भीर भटभारे मै । टूटि गए गर्ब तरु कहै रसरूप कवि छूटि गए गढ़ रोखि रच्छक निहारे मै ॥ ढहि गईं दुवन की दवा में दनुजबाम बहि गईं जोगिनी रकत नद नारे मै ॥

थपि गए थिरा में विभीषन से केते. अरु खपि गए केते तेरे खग्ग के अखारे में ॥ ६० ॥

इत कपि रिंछ उत रच्छसनहों को चमूँ डङ्का देत बङ्का गढ़ लङ्का ते कढ़ै लगी । कहै पद्माकर उमण्डि जुद्धहों के हित चित्त में क-कूक चोप चाव की चढ़ै लगी ॥ बानन के बाहिबे कों कर में कमान कसि धाई धूर धान आसमान में मढ़ै लगी । देखतै बनी है दुहूँ दल की चढ़ा चढ़ि में राम दृग दूपें नेकु लाली जो चढ़ै लगी ॥

चढ़े रघुनाथ रणधीर दसमाथ पर धरत धरा को दिगदन्ती हिय हारे हैं । आगे आगे भालु-जूह चलत कराल भये पाछे पाछे कपिजाल काल बपु वारे हैं ॥ कहै मणिदेव हेरि हेरि पुर-बासी झूमि फेरि फेरि कहैं भूरि भे सों भ्रम भारे हैं । लङ्क न बचैगी अब लङ्क न बचैगी लखो आगे आगे धूम पाछे आवत अँगारे हैं ॥ ६२ ॥

बङ्क योधिराज लङ्कराज सों झपटि भिरे

जुद्ध में निसङ्क मानो प्रलय करौवा से। तिनको सुहाथ जनु दीनन के नाथ नीके जानि परे एक साथ गरब-गरीवा से ॥ कहै मणिदेव भड़राने जे लरत हुते मड़राने फिरत डराने सब कौवा से। छूटत सु बान देव लूटत अनन्द जीति ऊटत अरीस सीस फूटत पतौवा से ॥ ६३ ॥

रारि न रचै तूँ त्रिपुरारि जू को बर पाय सौंहै ईसहू को ईस वामें नहिं आन है। देखु जाको दूत मजबूत पारावार नाँघि बल सों अकूत लङ्क लायगो कृसान है ॥ कहै हनुमान मेरो मानु कह्यो दससीस नातो बिसे बीस तेरो जायबोई प्रान है। निरखि नरासन को भूलत कहा तू अब राम धस्यो चाहत सरासन पै बान है ॥६४॥

एरे दससीस मेरो मानु कहो बिसे बीस छाँड़ि दे सकल गन्न गरब सरीर को। ह्वै है भलो नाहि तू विचारु मन माँहि मूढ़ काहें सुख बीच बीज बोवत है पीर को ॥ कहै हनुमान

कौन होयगो सहैया तेरो कौन कै है परम धरैया रनधीर को। ताद्दिन बरासन तें भाधि हैं नरासन ए जादिन सरासन चढ़ैगो रघुबीर को ॥

देखु पारावार को अपार सेतु बाँध्यो जिन बाहिनी समेत चारु आइबो इतै बिचारि। धाय तिनहीं के जाय सरन बिनै को करु मन को महान मूढ़ गहव गरूर गारि ॥ कहै हनुमान बली आपनी भुजान हेरि कहा तूं रह्यो है अब धीरज को धींग धारि । केहुँ न बचैगो सोक लङ्क में मचैगो अरे जौ तूं दसमाथ रघुनाथ सों रचैगो रारि ॥ ६६ ॥

जेते जोर जङ्ग माँहि जाहिर उमङ्गभरे मारि-हैं तिन्हैं ते रङ्गभूमि माहिँ डाटि डाटि । जानत तूं बङ्क जाहि अतिहीं निसङ्क तौन लङ्क वारी भूमि दैहैं लोथिन सो पाटि पाटि । कहै हनु-मान तो बसाय है कछू न बान तिनके अघाय हैरे श्रोणित को चाटि चाटि। ईस को निवेदन करैंगे अवनीस राम एरे दससीस तेरे सीसन को काटि काटि ॥ ६७ ॥

ह्वै है हाय हाल कौन सोचत बिहाल भए निकरै कराल काल कौणप ह्वै संका में। तेऊ अकुलाने बिलखाने औ सकाने फिरैं रहे जे बखाने सूर समर निसंका में॥ कहै हनुमान एरे रावन प्रचण्ड चण्ड रावन सों बोलत कहा है हाँकि डङ्का में। गाई सब लोकन सुरन सुखदाई अब आई रघुराई की सुहाई फौज लंका में॥

भीति धाई लंक में अभीति धाई सुरलोक कीति धाई तिनकी दिसनि गुन गाथ की। नीति बर प्रीति कै बिभीषन के उर धाई चहूँ ओर चमू धाई बानरी ता साथ की॥ कहै रामनाथ कौवे उचित करहु तौन मरजाद धाई गई समुद्र के पाथ की। धूरि धाई गगन रसातल लों धाक धाई देखु दसकन्ध तूं अवाई रघुनाथ की॥ ९९॥

आयो कपि एक सो तौ गयो न सँभारो नेकु जारि लंकपुरी कीन्हो खाक सी सरीर को। कहा ह्वै है कहा ह्वै है भाखैं पुरवासी सबै काहू ना

बसै है जातुधानन के भौर को ॥ कहै रामनाथ तापै जाय कै बिभीषनहूं मिल्यो सरसाय नदी नैनन के नीर की। घन के घुमड़ सी उमड़ रही चारो ओर एरे लंकपति देखु सेना रघुबीर को ॥ १०० ॥

चाव चढ़े सुमन अचात्र चढ़ो लंकपति भार चढ़ो सेस के सहस फन बंका पै। कीस चढ़े गिरि के सिखर से कंगूरन पै जोगिनी खबीस चढ़ो आनँद असंका पै॥ कहै रामनाथ रंग चढ़ो है ऋषोगन पै जैसे चढ़े रङ्ग भूरि निधि लहैं रङ्का पै। ऐरावत पै सुरेस ब्रष पै महेस चढ़े देखि रघुबीर को चढ़ाई भई लङ्का पै ॥ १०१ ॥

आग ते निकसि आई आग ज्योति ते सवाई रीझि रघुराई मन भाई बिन खेद सों। मानों प्रानदायिनी गँवाई मनि आई आज किधों राज तीनों लोक पायो रिपु-छेद सों ॥ नाना चित चाइन सों वैसेई सुभायन सों रामचन्द पायन सों लागी एक भेद सों। मिले मीत मीतम ज्यों

धनी सों • टौरि नीता तैसैं रामै मिली सीता जैसे गीता मिली वेद सों ॥ १०२ ॥

जब ते सिधारे तब ते लै जबलों न आये रहे बन बाग सोंधि सिगरे कुरंगहो । उभरी उदासी भरि डोलत है पुरवासी देखत है सब सब ही को दुख अंगही ॥ कहै मणिदेव राज-गादी पर बैठतही सबही में छाय गई धारि कै उमङ्ग ही। लोक सब गाई छवि औधि की सुहाई गई मानो रघुराई साथ आई फेरि सङ्गही ॥ १०३ ॥

बागन में बिमल तड़ागन में देखि परे महिष महागन में खिम सों खगति है। हाटन में हाथी हय ठाटन में आछी अति चारो दिसि बाटन में पूरन पगति है ॥ मणिदेव मोद को तनोत राम राज होत करिकै उद्दोत जग जाहिर जगति है । सरजू कगारन में नौबति नगारन में औधि के अगारन में आभा उमगति है ॥ १०४ ॥

धन्य यह दिन घरी छिन कहै रघुनाथ सुनि धुनि• सबही की बिपदा भजति है। घन की गरज

जानि कान दे रहैं हौ कहा याके आगे घन घहरानि सो लजति है ॥ आये राजा राम धाम धाम मे अनंद फैले जै जै सोर रैयत अभै ह्वै कै सजति है। आजु अवध बीच दसरथ जू के सौध आगे चौदह बरस पीछे नौबति बजति है॥१०५॥

जानकी के जौवन जगत के जनक राम कीरति तिहारी यों निहारी गङ्गधार सी । श्रीपति सुकवि कहै सारद सी सारदा सी पारद सी नारद सी पय-पारावार सी ॥ केहरि सी कम्बु सी कपूर सी कलानिधि सी कुन्दकलिका सी कामधेनु के अगार सी । हंसिनि सी हीरा सी हली सी हिमगिरि सी हरासन सी हर सी हरा सी हरहार सी ॥ १०६ ॥

कीरति तिहारी रघुबीर धीर बरनत श्रीपति फनिन्दहू की मति हहरति है। छिति पर हिमगिरि हिमगिरि पर गङ्ग गङ्ग पर सरद घटा सी घहरति है ॥ सरद घटा पै सुरपति के अटा सी सुरपति के अटा पै चन्द छटा छहरति है। चन्द

की छटा पै धुव धाम सी धवल धुव धाम पर धरम धुजा सी फहरति है ॥ १०७ ॥

राजा रामचन्द्र ऐसे हाथी बकसत साजि रतन के हौदें बहुरंगन रगीले से । सावन की साझ में दिखात जैसे नीरद से कहूं लाल पियरे हरित धौरे नीले से॥ दसहूं दिसा के देस सकल दिसा के अन्त तिन पैं बहार बैठि देखैं शम्भु सीले से । बन लागैं बाग से नगर लागैं सदन से देस लागैं गाँव से पहार लागैं टीले से॥१०८॥

बकसे बुलन्द जे गयन्द महादानि राम काम घनवारे रूप भूपर हलत हैं । उद्धत उदण्ड सुण्डादण्डन अखण्ड मारतण्ड को प्रचण्ड तेज जाहिर हलत हैं ॥ कवि सरदार पारावार पार सोखिरोखि दुवन दवाय दिव्य छापन छलत हैं । दीनन के दोष दिग्गजन के दिमाक दुजराजन के दारिद दबावत चलत हैं ॥ १०९ ॥

दल दुतिवारे मद भरत पनावे नभ घन बन कारे जे बघारे रणधीर के । सुण्डन पुकारे भारे

मदन फुहारे सरदार जोरवारे भारभारे अंग जाहिर अमीर के ॥ द्रौपति दतारे करे दिग्गज दुखारे न्यारे निपट सिहारे प्यारे सुवन समीर के । जलज सिंगारे मानो झलकत तारे गजराज साजवारे ए दुलारे रघुबीर के ॥ ११० ॥

महाबीर धीर राम रावरे तुरंग रूप रुचिर अनङ्ग तङ्ग कसि कसि कीले हैं । बिना पच्छ पच्छिराज पच्छ के जितैया सरदार पच्छ फेरे फिरैं जमत सजीले हैं ॥ चाँपत चलाँको चैन चेत चञ्चला के चक्र देत न अलात चक्र करत जसीले हैं। फरकि फतूहन के फैलें अंग अंग संग फुरकत फेन डारि फाँदत फबीले हैं ॥ १११ ॥

मृगटसना सी देखि दौलति दिगोसन की तृषित मृगा सों दिसि देस देस धायो मैं । झूठे गुन गथि गाय लम्पट लबारन के बाधो सहि सहि आधो जनम बितायो मैं ॥ जानिये न कौन हेत प्रगट्यो कहाँ तें अब सुमन के अंग को सनेह

बिसरायो मैं । चारों फलदायक सहायक गरीबन को राम रघुनायक कलपतनु पायो मैं॥११२॥

गंगा जल अमल अमन्द मकरन्द बर सुचित सुगम्ब गाय वेदहू न तरिगो । पारानन्द पावन पराग परसत पद रम्भा रति मान जाको चित्त वित्त हरिगो ॥ सुक सनकादि नारदादि सिव सेवैं सदा बदत गुलामराम तोहिं क्यों बिसरिगो॥ रामपदपङ्कज बिहाय हाय मोहबस मनभृङ्ग विषय-बबूरवन परिगो ॥ ११३ ॥

देखि राम स्यामघन दामिनि दसन दुति कृपादृष्टि बृष्टि कहूँ अनत न राचैगो । गिरा गरजनि जाकी अङ्कन मधुर भूरि पूरि कै अनन्त सुख निजानन्द माचैगो ॥ प्रीति रितु पावस उदै के भये गये ताप सीतल समीर साँत कामघन बाचैगो । बदत गुलामराम एक रस आठौंजाम मेरो मन मुदित मयूर कब नाचैगो ॥ ११४ ॥

पर-घर जाय जाय नीच गुन गाय गाय आखर बढ़ाय हाय दाँत काढ़ि जाँच्यो मैं । पेट

लगि धाय धाय उद्यम उपाय हाय करत रहत नित लोग रंग राँच्यो मैं ॥ कौन जानै दीस ऐसे केतिकौ बितीत भये प्रेम-सखी ताप कौ सहत सदा आँच्यो मैं । भरत के भैया मेरी बिपति हरैया राम तोहि बिन जाँचे ते अनेक नाच नाँच्यो मैं ॥ ११५ ॥

पाँय पङ्कजात की पुनीतता अहिल्या जानी सुखडादगड बाहुबल जान्यै पिनाक ने । राम-रोष जान्यो सिन्धु शूल महि बाँध्यो गयो रीझि जानी राजा भो बिभीषन बराक ने ॥ काय कमनीय-कोमलाई जानकी नै जानी जानी है कठोरताई रावन निशाक ने । दीनबन्धुता कौं नीके जानत गुलामराम जाकौं जग काहू के न हारे परे भाकने ॥ ११६ ॥

चोर बिष व्याधहू तें दावानल आधिहू तें भूत प्रेत की जमाति जबै जहाँ माखिहैं । अगम अरन्यहू तें शैल सरवन्यहू तें बाघ सिंह बात घात दीनता न भाखिहैं ॥ अहि. रिपु

मारिहू तें घोर ग्रह धारिहू तें विषम बयारिहू तें सन्त श्रुति साखि हैं। जम के जसूमन तें तीव्र मसि पूषन तें अपने गुलाम कों रमैया राम राखि हैं ॥ ११७ ॥

तृण के समान राजकाज सब त्याग करि पाल्यो पितुबचन जो जगत जनैया है । कहै पद्माकर विवेकहो को बानो बाँधि साँचो सत्य-सन्ध बीर धीरज धरैया है ॥ सुमृति पुरान बेद आगम कह्यो जो पन्थ आचरत माई शुद्ध करम करैया है । मोदमतिमन्दर पुरन्दर महो का धन्य धरमधुरन्धर हमारो रघुरैया है ॥ ११८ ॥

औगुन अनन्त खरदूषन लों दोषवन्त तुच्छ त्रिसिरा लों जाको नेकहू न जम है । कहै पद्माकर कबन्ध लों मदन्ध महापापी हौं मरीच लों न दाया को दरस है ॥ मन्थरा लों मन्थर कुपन्थी पन्थ पाहन लों बालिहू लों विषई न जान्यो और रस है । व्याधहूं लों बधिक बिराध लों बिरोधी राम एते पै न तारो तौ हमारो कहा बस है ॥ ११९ ॥

उकति अनेकहो पै एकहू कही न परै टे-
कही हमारी केकहो हू तें सठिन है । कहै
पदमाकर न छाया है छमा की ऐसो काया क-
लिकोह मोह माया की मठिन है ॥ यातें तुम
गीध लौं सुबीधियौ न मोसों राम मेरी मति
घोर या कठोर कमठिन है । लङ्गगढ़ तोरिबे तें
रावन कौं रोरिबे तें मोहि भववन्धन तें छोरिबो
कठिन है ॥ १२० ॥

जोग जप सन्ध्या साधु-साधन सबेई तजे
कीन्हे अपराध जे अगाध मन भावते । तेते तजि
औगुन अनन्त पदमाकर तौ कौन गुन लैकै
महाराजहिँ रिझावते ॥ जैसे अहैं तैसे पै तिहारे
बड़े काम के हैं नाहीं तौ न एते बैन कबहूँ
सुनावते । प्रावते न मोसों जो पै अधम कहूँ तौ
राम कैसे तुम अधमउधारन कहावते ॥ १२१ ॥

अपिने पराये तें सुहाये भोग बिञ्जन लै तोही
कों जिमाई तातें रसना पतीजियो । कहै पद-
माकर ज्यों तेरिये कही मैं करौं मेरी कही एक

दिन एती मानि लीजियो ॥ आपनीये जानि कै जुबान तोसों जाँचत हौं बोलत बिलम्ब एक छन को न कीजियो । जंगी जमराज के जसू-सन सों काम परें रामही को नाम तूं हरेई कहि दीजियो ॥ १२२ ॥

आठोजाम सीताराम जानकी-रमन राम राघोराम राम राम रामहीं उचरते । ना तौ पद्माकर हौं बसते अनग ह्वैकै ध्यान जप जोग जज्ञ तीरथ में अरते ॥ परते न कहूं भव-फन्द में सुनो हो राम धाम धाम भूमैं फूंकि फूंकि पग धरते । अधमउधारन जो सुनते न थारो नाम और को न जानें पाप हम तो न करते ॥१२३॥

बैठि कै दृकन्तन में करु तू बिचार चारु सन्तन के पास रहु आनँद सों खिलि जा । छोड़ि कै कुबातन कों ज्ञान की सुबातन में दूध सों मँजार जिमि ऐसी भाँति हिलि जा ॥ कहै मणिदेव दिसि देखि के सुजानन की बचनै अजानन के आछी बिधि गिलि जा । काटि सब

पासन कों छोड़िकै कुआसन को सासन को मानि रामदासन में मिलि जा ॥ १२४ ॥

आसन बिराजैं पन्नगासन बिहङ्गम के थिर चर जीवन के मंगलकरन हैं । रुज के हरन दोष दुख के दरन अरविन्द के बरन सुखचन्द के धरन हैं ॥ परम उजागर के प्यारे गुनआगर के भीम भवसागर के तारन तरन हैं । सबही के प्यार सिय हिय के सिंगार सेनापति के अधार रामचन्द्र के चरन हैं ॥ १२५ ॥

अथ स्फुट कवित्त ।

इन सों अखण्ड बल सोऊ छवि गोऊ भयो कोऊ नहिं समता कों दोऊ बर बीर की । भञ्जिहैं पिनाक इन माहिं न मनाक मङ्ग जीती इन सोभा नाक नाथ रघुधीर की ॥ कहै मणि-देव बसी मेरे मन माँहिं सुनो लसी अति भानु जसी सुन्दर सरीर की । रसमि अनन्त भरी

हँसनि सुमन्द महा लसनि सु चाँपवारी कसनि तुनीर की ॥ १ ॥

केते परि पाँवन पै चाहि रहे चाँवन सों रंग भरे दोउन के आवन अनोखे सों । सिथिला ह्वै रहे केते मिथिला के लोग तबै बिथिला न होय भाव अमल अदोखे सों ॥ मणिदेव देखि कै बजार को बिनोद राम चाहि चहुंकोद रहे मोद अति चोखे सों । निपट नवेलिन की आछी अलबेलिन की नांई वर बेलिन की झूमनि झरोखे सों ॥ २ ॥

सोभा सुभताल में सिँगार के सिवार कैधौं नागसुत ससि पै सुधा-हित सु भीर के । कञ्ज मुख ऊपै मकरन्द हित भृङ्ग कैधौं मखतूल तन्तू स्याम मनमथ धीर के ॥ दासन के मन फाँसिबे की प्रेम फाँस कैधौं परम हुलास कर हर भव पीर के । चमकत कारे चटकारे लटकारे घुँघु-रारे सुकुमारे प्यारे केस रघुबीर के ॥ ३ ॥

कञ्जदुतिभञ्जन हैं खञ्जन के गञ्जन हैं रञ्जन करत जनमञ्जन सँवारे हैं । सोभा के सदन कोटि मोहत मदन मोन-मद के कदन मृग दूरि करि डारे हैं॥ लाज गुन गेह तेह मेह बरसे अछेह देह न सम्हारि जात जब तें निहारे हैं । कारे कजरारे अनियारे कृपकारे सितवारे रतनारे राम लोचन तिहारे हैं॥ ४ ॥

सील के समुद्र सुख मन्दिर कृपा के पुञ्ज सुखमा की सीमा सम सरद सरोज के। कोमल अमल चारु चातुरी चटक भरे जोहत हरत मन मोहत मनोज क ॥ सुचिता सुगम्भता बखानै ऐसो कौन कवि अरुन सितासित सँवारे बिधि चोज के । बदत गुलाभराम राम-नैन अभिराम चीकने रसीले बड़े दानी महा मौज के ॥ ५ ॥

जाको तन देखि घनस्याम दुति छांम होति नैनन निहारि अरबिन्द हिय हारो है। सूर में सिरोमनि त्यौ दानि में सिरोमनि हैं रघुकुल महारथी जग उजियारो है॥ रघुराज राज राज

राजन को सिरताज धरम धुरन्धर धरा में धीर धारो है। विक्रम चिविक्रम सो अस्त्र में अनोखो बीर देखु रघुबीर दसरत्थ को दुलारो है ॥ ६ ॥

चलो री बिलोकिबे कों तिनकी बनक बीर साजि साजि भूषन बिताओ री न खन कों। बोलनि अमोलनि तें हिय कों हरत सब भाँतिन तें हैं री सुखदायक चखन कों ॥ कहै हनुमान मारहू तें सुकुमार चारु कोमल-कुमार लएँ संग में सखन कों। मोद बरसावत सनेह सरसावत री आवत हैं नगर लखावत लखन कों ॥ ७ ॥

आवत जनकजा कों ब्याहन समोद सुनि दीबे कों प्रमोद-पुंज परम विदेह कों। हीरन के भूषन अदूषन सों आछी भाँति कहै हनुमान साजि साजि सब देह कों ॥ देखिवें बरात में ललाम राम जू की छबि मिथिला की बाम सरसाय बर नेह कों। भूलि रहीं सौधन पै झूलि रहीं मैन हियें फूलि रही आनँद सों भूलि रहीं गेह कों ॥ ८ ॥

आवति सवारी सुनि कोसल-कुमार वारी मिथिला की नारिन के वृन्द ते ठठकि रहे। धवल अगारन पै उन्नत सुठारन पै देखिबे कों तिनवारे लोचन मटकि रहे॥ कहै मणिदेव केती बालन के बालन कैं लट के सँघट ऐसो भाँति सों लटकि रहे। मेघ में सरदवारे मानों चन्द्रलान पर साँवरे जलदवारे धोरवा छटकि रहे॥ ६॥

मोद तें विहीन हुते व्याकुल जे दीन लोग तिनके प्रमोद-पुंज परम जिलाँयें देत। साँन सों महाँन भरे अतिहीं अमान वीर बैरी बलवानन के हियन हिलायें देत॥ कहै हनुमान काज करता कहर काल कोपप करालन के बंस कों बिलायें देत। चारु सुकुमार कोसलेस के कुमार राम मार की अपार छबि छार में मिलायें देत॥

सवैया।

गृह काजहि में पगिबो अतिहीं यह तौ न भले जन को मग है। सुतदारन में भरिबो अति नेह भुजङ्गम पै धरिबो पग है॥ हनुमान कहै

भवसागर के तरिबे को या मेरो कहो डग है । अपनो करु राम सियावर को अपनो न कोऊ सपनो जग है ॥ ११ ॥

सतसंगति कों करिकै मन तें दुरबुद्धि के भाव भगावने हैं । गुरु जी उपदेश किये तिनकों कहूं बैठि इकन्त जगावने हैं ॥ हनुमान जिते कहै बैन तिते छल छन्दन के नहिँ गावने हैं । विषयादिक सों रति मैं न चहौं रघुबीर में प्रेम लगावने हैं ॥ १२ ॥

या जगजीवन को है यहै फल जो छल छाड़ि भजै रघुराई । सोधि के सन्तत सन्तनहूं पद्माकर बात यहै ठहराई ॥ ह्वै रहै होनी प्रयास बिना अनहोनी न ह्वै सकै कोटि उपाई । जो बिधि भाल में लीक लिखी सु बढ़ाई बढ़ै न घटै न घटाई ॥ १३ ॥

बैस बिसामिनि जाति बही उमहो छिनहीं छिन गंग की धार सी । त्यों पद्माकर पेखतना अजहूं न भजै दसरत्थकुमार सी ॥ बार पके थके

अंग सबै मढ़ि मीच गरेही परी इरछार सौ।
देखै दसा किन आपनो तूं अब हाथ के कङ्गन कों कहा आरसी॥ १४ ॥

पाइ नसीब तें मानुष देंह फँद्यो तरुनीन के हाइन भाइन। आइन में कियो रागरुद्वेष न काहू गन्यो अपनेहीं बड़ाइन॥ डाइन सी त्रिसना के ग्रसे कलपद्रुम छाड़िकै सेवैं बकाइन। काइनकी गति ह्वै है दई जु भई नहीं प्रीति सियापतिपाइन॥ १५ ॥

इति श्रीरघुनाथशतकं भारतजीवनसम्पादक-रामकृष्णवर्म्मसंगृहीतं समाप्तम्।

भारतजीवन यंत्रालय की सक्षेप सूची।

बेनिसका बांका उपन्यास	॥)
चन्द्रकला उपन्यास	।)
चित्तौरचातकी उपन्यास	॥
लावण्यमयी उपन्यास	।)
सच्चासपना (उत्तम उपन्यास है)	।)
संसारदर्पण उपन्यास	२)
कुसुम कुमारी उपन्यास चारो भाग	१)
मधुमालती उपन्यास	॥)
पुलिसवृत्तान्तमाला उपन्यास	।)
चन्द्रकान्ता उपन्यास चारो भाग	२)
चन्द्रकान्तासन्तति चौदहो भाग	७)
प्रमीला उपन्यास	॥।)
ईला उपन्यास (अवश्य देखिये)	॥।)
कमिलनी उपन्यास	।)
अमलावृत्तान्तमाला	॥)
कुसुमलता प्रथम भाग	॥)
ठगवृत्तान्तमाला	॥)
रसेलस ॥।)	दीपनिर्वाण ॥)
अकबर ॥)	दलितकुसुम ।।)

रामकृष्ण वर्म्मा
सम्पादक भारतजीवन—काशी।

काव्य के ग्रंथ।

अलकशतक	=)	दृष्टान्ततरङ्गिणी	/)
अंगदर्पण	=)	नखशिख चंद्रसेखरकृत	=)
अंगरत्नाकर	≡)	प्रेमफौजदारी	/
अन्योक्तिकल्पद्रुम	।=)	पजनेशप्रकाश	।
अंगादर्श	।)	पदुमाभरण	।)
अष्टयाम	≡)	बलभद्रकविकृतनखशिख	=)
अलंकारमणिमञ्जरी	।/)	बी [illegible]	।)
इश्कनामा	=)	बसन्तमञ्जरी	≡)
उपालम्भशतक	=)	बिहारीसतसई	१॥
ऋतुतरंगिणी	।/)	वृन्दविनोदसतसई	।/)
केशवदासकृत नखशिख	=)	बरवै नायिकाभेद	=
कविकुलकण्ठाभरण	=)	बलबीरपचासा	=)
मनोजमंजरीचारोभाग	१=	वृन्दावनशतक	/)
कर्णाभरण	=)	भाषाभूषण	=)
चरणचन्द्रिका	=)	भावविलास	।=)
चेतचन्द्रिका	।=)	भवानीविलास	।=)
छन्दप्रभाकर	१॥)	भावरसामृत	।)
छन्दोमञ्जरी	॥।)	भ्रमरगीत	/)
छन्दरत्नावली	≡)	भड़ौआसंग्रह चारभाग	॥=)
जगद्विनोद	॥)	मनोहरप्रकाश	१॥)
दीपप्रकाश	।/)	मनोविनोद	=)

रामकृष्ण वर्म्मा

भारतजीवन छापाखाना — बनारस।